जिनवाणी भक्ति

श्वास-श्वास में तुझे बसायें, हे जिनवाणी माँ !
बार-बार हम शींश झुकायें, हे जिनवाणी माँ !!

मूल अर्थ कर्त्ता हैं तेरे, तीर्थंकर स्वामी ।
उत्तर ग्रन्थ रचयिता तेरे, श्री गणधर स्वामी ।।
हम सब श्रोता सुनने आये, श्री जिनवाणी माँ ।
बार-बार हम शीश झुकायें, हे जिनवाणी माँ।।१।।श्वास..

ज्ञान सूर्य सम निर्मल बनता, तेरी वाणी से ।
चारित चन्दा सा उज्वल हो, तेरी वाणी से ।।
अखिल विश्व कल्याण कारिणी, आगम वाणी माँ ।
बार-बार हम शीष झुकायें, हे जिनवाणी माँ।।२।। श्वास..

तत्त्व बोधनी, आत्मशोधनी, भुवन मोहनी माँ ।
चित्त रोचनी, कष्ट मोचनी, सदा सोहनी माँ ।।
अनेकान्त अरु स्याद्वाद मय, अर्हद् वाणी माँ ।
बार-बार हम शीश झुकायें, हे जिनवाणी माँ।।३।।श्वास..

आत्मवेदनी, पापभेदनी, पुण्य बंधनी माँ ।
कर्म छिन्दनी, धर्म नंदनी, विश्ववंदनी माँ ।।
तीर्थंकर की दिव्य देशना, मोक्ष दायिनी माँ ।
बार-बार हम शीश झुकायें, हे जिनवाणी माँ।।४।।श्वास..

अहो भारती सारवती माँ, सरस्वती माता ।
वीर हिमाचल से निकली हो, ज्ञान सलिल दाता ।।
पाप-ताप-संताप हारिणी, जग कल्याणी माँ ।
बार-बार हम शीश झुकायें, हे जिनवाणी माँ।।५।।श्वास..

दर्शन भावना

पुनः दर्शन-पुनः दर्शन-पुनः दर्शन मिले स्वामी।
यही है भावना स्वामी - यही है प्रार्थना स्वामी।।

तुम्हारे दर्श बिन स्वामी, कहाँ हम चैन पायेंगे।
प्रभुवर याद आयेंगे - नयन आँसू बहायेंगे।।
निकाली नीर से मछली, तडपती चेतना स्वामी।
पुनः दर्शन-पुनः दर्शन-पुनः दर्शन मिले स्वामी।

बिना स्वाति की बूंदों के, पपीहा प्राण तज देगा।
कृपा के मेघ बरसा दो - जिनेश्वर नाम रट लेगा।।
निहारे चातका तुमको, यही रटना रटे स्वामी।
पुनः दर्शन-पुनः दर्शन-पुनः दर्शन मिले स्वामी।

विरह की वेदना स्वामी-तुम्हें कैसे सुनायें हम।
चाँद बिन ज्यों चकोरे सा-हमारा आज ये तन मन।।
शिशु माता से बिछडा ज्यों, रूदन करता रहे स्वामी।
पुनः दर्शन-पुनः दर्शन-पुनः दर्शन मिले स्वामी।

नहीं सुर सम्पदा चाहूँ - नहीं मैं राज पद चाहूँ ।
यही है कामना मेरी, प्रभु तुमसा ही बन जाऊँ ।।
मिले निर्वाण न जौलों, रहो नयनों के पथगामी।
पुनः दर्शन-पुनः दर्शन-पुनः दर्शन मिले स्वामी।

सौजन्य
श्रीकेशर प्रिंटर्स ॲण्ड पब्लिशर्स,
डी-३/७९ , एम.आय.डी.सी. चिंचवड, पुणे- ४११०१९
फोन : (०२०) २७४७३५५३, ९४२२५०६६६९

समाधि भक्ति

पावन वर्षायोग कमिटी (पुणे चातुर्मास २०१२)

जिनवाणी भक्ति
श्वास-श्वास में तुझे बसायें, हे जिनवाणी माँ !
बार-बार हम शींश झुकायें, हे जिनवाणी माँ !!
मूल अर्थ कर्त्ता हैं तेरे, तीर्थंकर स्वामी ।
उत्तर ग्रन्थ रचयिता तेरे, श्री गणधर स्वामी ।।
हम सब श्रोता सुनने आये, श्री जिनवाणी माँ ।
बार-बार हम शीश झुकायें, हे जिनवाणी माँ।।१।।श्वास..
ज्ञान सूर्य सम निर्मल बनता, तेरी वाणी से ।
चारित चन्दा सा उज्वल हो, तेरी वाणी से ।।
अखिल विश्व कल्याण कारिणी, आगम वाणी माँ ।
बार-बार हम शीष झुकायें, हे जिनवाणी माँ।।२।। श्वास..
तत्त्व बोधनी, आत्मशोधनी, भुवन मोहनी माँ ।
चित्त रोचनी, कष्ट मोचनी, सदा सोहनी माँ ।।
अनेकान्त अरु स्याद्वाद मय, अर्हद् वाणी माँ ।
बार-बार हम शीश झुकायें, हे जिनवाणी माँ।।३।।श्वास..
आत्मवेदनी, पापभेदनी, पुण्य बंधनी माँ ।
कर्म छिन्दनी, धर्म नंदनी, विश्ववंदनी माँ ।।
तीर्थंकर की दिव्य देशना, मोक्ष दायिनी माँ ।
बार-बार हम शीश झुकायें, हे जिनवाणी माँ।।४।।श्वास..
अहो भारती सारवती माँ, सरस्वती माता ।
वीर हिमाचल से निकली हो, ज्ञान सलिल दाता ।।
पाप-ताप-संताप हारिणी, जग कल्याणी माँ ।
बार-बार हम शीश झुकायें, हे जिनवाणी माँ।।५।।श्वास..
दर्शन भावना
पुनः दर्शन-पुनः दर्शन-पुनः दर्शन मिले स्वामी।
यही है भावना स्वामी - यही है प्रार्थना स्वामी।।
तुम्हारे दर्श बिन स्वामी, कहाँ हम चैन पायेंगे।
प्रभुवर याद आयेंगे - नयन आँसू बहायेंगे।।
निकाली नीर से मछली, तडपती चेतना स्वामी।
पुनः दर्शन-पुनः दर्शन-पुनः दर्शन मिले स्वामी।
बिना स्वाति की बूंदों के, पपीहा प्राण तज देगा।
कृपा के मेघ बरसा दो - जिनेश्वर नाम रट लेगा।।
निहारे चातका तुमको, यही रटना रटे स्वामी।
पुनः दर्शन-पुनः दर्शन-पुनः दर्शन मिले स्वामी।
विरह की वेदना स्वामी-तुम्हें कैसे सुनायें हम।
चाँद बिन ज्यों चकोरे सा-हमारा आज ये तन मन।।
शिशु माता से बिछडा ज्यों, रूदन करता रहे स्वामी।
पुनः दर्शन-पुनः दर्शन-पुनः दर्शन मिले स्वामी।
नहीं सुर सम्पदा चाहूँ - नहीं मैं राज पद चाहूँ ।
यही है कामना मेरी, प्रभु तुमसा ही बन जाऊँ ।।
मिले निर्वाण न जौलों, रहो नयनों के पथगामी।
पुनः दर्शन-पुनः दर्शन-पुनः दर्शन मिले स्वामी।
सौजन्य
श्रीकेशर प्रिंटर्स ॲण्ड पब्लिशर्स,
डी-३/७९ , एम.आय.डी.सी. चिंचवड, पुणे- ४११०१९
फोन : (०२०) २७४७३५५३, ९४२२५०६६६९
समाधि भक्ति
पावन वर्षायोग कमिटी (पुणे चातुर्मास २०१२)

जिनवाणी भक्ति
श्वास-श्वास में तुझे बसायें, हे जिनवाणी माँ !
बार-बार हम शींश झुकायें, हे जिनवाणी माँ !!
मूल अर्थ कर्त्ता हैं तेरे, तीर्थंकर स्वामी ।
उत्तर ग्रन्थ रचयिता तेरे, श्री गणधर स्वामी ।।
हम सब श्रोता सुनने आये, श्री जिनवाणी माँ ।
बार-बार हम शीश झुकायें, हे जिनवाणी माँ।।१।।श्वास..
ज्ञान सूर्य सम निर्मल बनता, तेरी वाणी से ।
चारित चन्दा सा उज्वल हो, तेरी वाणी से ।।
अखिल विश्व कल्याण कारिणी, आगम वाणी माँ ।
बार-बार हम शीष झुकायें, हे जिनवाणी माँ।।२।। श्वास..
तत्त्व बोधनी, आत्मशोधनी, भुवन मोहनी माँ ।
चित्त रोचनी, कष्ट मोचनी, सदा सोहनी माँ ।।
अनेकान्त अरु स्याद्वाद मय, अर्हद् वाणी माँ ।
बार-बार हम शीश झुकायें, हे जिनवाणी माँ।।३।।श्वास..
आत्मवेदनी, पापभेदनी, पुण्य बंधनी माँ ।
कर्म छिन्दनी, धर्म नंदनी, विश्ववंदनी माँ ।।
तीर्थंकर की दिव्य देशना, मोक्ष दायिनी माँ ।
बार-बार हम शीश झुकायें, हे जिनवाणी माँ।।४।।श्वास..
अहो भारती सारवती माँ, सरस्वती माता ।
वीर हिमाचल से निकली हो, ज्ञान सलिल दाता ।।
पाप-ताप-संताप हारिणी, जग कल्याणी माँ ।
बार-बार हम शीश झुकायें, हे जिनवाणी माँ।।५।।श्वास..
दर्शन भावना
पुनः दर्शन-पुनः दर्शन-पुनः दर्शन मिले स्वामी।
यही है भावना स्वामी - यही है प्रार्थना स्वामी।।
तुम्हारे दर्श बिन स्वामी, कहाँ हम चैन पायेंगे।
प्रभुवर याद आयेंगे - नयन आँसू बहायेंगे।।
निकाली नीर से मछली, तडपती चेतना स्वामी।
पुनः दर्शन-पुनः दर्शन-पुनः दर्शन मिले स्वामी।
बिना स्वाति की बूंदों के, पपीहा प्राण तज देगा।
कृपा के मेघ बरसा दो - जिनेश्वर नाम रट लेगा।।
निहारे चातका तुमको, यही रटना रटे स्वामी।
पुनः दर्शन-पुनः दर्शन-पुनः दर्शन मिले स्वामी।
विरह की वेदना स्वामी-तुम्हें कैसे सुनायें हम।
चाँद बिन ज्यों चकोरे सा-हमारा आज ये तन मन।।
शिशु माता से बिछडा ज्यों, रूदन करता रहे स्वामी।
पुनः दर्शन-पुनः दर्शन-पुनः दर्शन मिले स्वामी।
नहीं सुर सम्पदा चाहूँ - नहीं मैं राज पद चाहूँ ।
यही है कामना मेरी, प्रभु तुमसा ही बन जाऊँ ।।
मिले निर्वाण न जौलों, रहो नयनों के पथगामी।
पुनः दर्शन-पुनः दर्शन-पुनः दर्शन मिले स्वामी।
सौजन्य
श्रीकेशर प्रिंटर्स ॲण्ड पब्लिशर्स,
डी-३/७९ , एम.आय.डी.सी. चिंचवड, पुणे- ४११०१९
फोन : (०२०) २७४७३५५३, ९४२२५०६६६९
समाधि भक्ति
पावन वर्षायोग कमिटी (पुणे चातुर्मास २०१२)

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

समाधि भक्ति

तेरी छत्रछाया भगवन्! मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।

जिनवाणी रसपान करुँ मैं, जिनवर को ध्याऊँ ।
आर्यजनों की संगति पाऊँ, व्रत-संयम चाहूँ ।।
गुणीजनों के सदगुण गाऊँ, जिनवर यह वर दो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।१।।
.....तेरी ।

परनिन्दा न मुँह से निकले, मधुर वचन बोलूँ ।
हृदय तराजू पर हितकारी, सम्भाषण तौलूँ ।।
आत्म-तत्त्व की रहे भावना, भाव विमल भर दो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।२।।
.....तेरी ।

जिन शासन में प्रीति बढ़ाऊँ, मिथ्यापथ छोड़ूँ ।
निष्कलंक चैतन्य भावना, जिनमत से जोड़ूँ ।।
जन्म-जन्म में जैन धर्म, यह मिले कृपा कर दो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।३।।
.....तेरी ।

मरण समय गुरु, पाद-मूल हो सन्त समूह रहे ।
जिनालयों में जिनवाणी की, गंगा नित्य बहे ।।
भव-भव में सन्यास मरण हो, नाथ हाथ धर दो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।४।।
.....तेरी ।

बाल्यकाल से अब तक मैंने, जो सेवा की हो ।
देना चाहो प्रभो ! आप तो, बस इतना फल दो ।।
श्वास-श्वास, अन्तिम श्वासों में, णमोकार भर दो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।५।।
.....तेरी ।

विषय कषायों को मैं त्यागूँ, तजूँ परिग्रह को ।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ता जाऊँ, नाथ अनुग्रह हो ।।
तन पिंजर से मुझे निकालो, सिद्धालय घर दो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।६।।
.....तेरी ।

भद्रबाहु सम गुरु हमारे, हमें भद्रता दो ।
रत्नत्रय संयम की शुचिता, हृदय सरलता दो ।।
चन्द्रगुप्त सी गुरु सेवा का, पाठ हृदय भर दो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।७।।
.....तेरी ।

अशुभ न सोचूँ, अशुभ न चाहूँ, अशुभ नहीं देखूँ ।
अशुभ सुनू ना, अशुभ कहूँ ना, अशुभ नहीं लेखूँ ।।
शुभ चर्या हो, शुभ क्रिया हो, शुद्ध भाव भर दो ।।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।८।।
.....तेरी ।

तेरे चरण कमल द्वय, जिनवर! रहे हृदय मेरे ।
मेरा हृदय रहे सदा ही, चरणों में तेरे ।।
पण्डित-पण्डित मरण हो मेरा, ऐसा अवसर दो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।९।।
.....तेरी ।

दुःख नाश हों, कर्म नाश हों, बोधि-लाभ वर दो ।
जिन गुण से प्रभु आप भरे हो, वह मुझमें भर दो ।।
यही प्रार्थना, यही भावना, पूर्ण आप कर दो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।१०।।

तेरी छत्रछाया भगवन् ! मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

समाधि भक्ति

तेरी छत्रछाया भगवन्! मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।

जिनवाणी रसपान करुँ मैं, जिनवर को ध्याऊँ ।
आर्यजनों की संगति पाऊँ, व्रत-संयम चाहूँ ।।
गुणीजनों के सदगुण गाऊँ, जिनवर यह वर दो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।१।।
.....तेरी ।

परनिन्दा न मुँह से निकले, मधुर वचन बोलूँ ।
हृदय तराजू पर हितकारी, सम्भाषण तौलूँ ।।
आत्म-तत्त्व की रहे भावना, भाव विमल भर दो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।२।।
.....तेरी ।

जिन शासन में प्रीति बढ़ाऊँ, मिथ्यापथ छोड़ूँ ।
निष्कलंक चैतन्य भावना, जिनमत से जोड़ूँ ।।
जन्म-जन्म में जैन धर्म, यह मिले कृपा कर दो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।३।।
.....तेरी ।

मरण समय गुरु, पाद-मूल हो सन्त समूह रहे ।
जिनालयों में जिनवाणी की, गंगा नित्य बहे ।।
भव-भव में सन्यास मरण हो, नाथ हाथ धर दो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।४।।
.....तेरी ।

बाल्यकाल से अब तक मैंने, जो सेवा की हो ।
देना चाहो प्रभो ! आप तो, बस इतना फल दो ।।
श्वास-श्वास, अन्तिम श्वासों में, णमोकार भर दो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।५।।
.....तेरी ।

विषय कषायों को मैं त्यागूँ, तजूँ परिग्रह को ।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ता जाऊँ, नाथ अनुग्रह हो ।।
तन पिंजर से मुझे निकालो, सिद्धालय घर दो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।६।।
.....तेरी ।

भद्रबाहु सम गुरु हमारे, हमें भद्रता दो ।
रत्नत्रय संयम की शुचिता, हृदय सरलता दो ।।
चन्द्रगुप्त सी गुरु सेवा का, पाठ हृदय भर दो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।७।।
.....तेरी ।

अशुभ न सोचूँ, अशुभ न चाहूँ, अशुभ नहीं देखूँ ।
अशुभ सुनू ना, अशुभ कहूँ ना, अशुभ नहीं लेखूँ ।।
शुभ चर्या हो, शुभ क्रिया हो, शुद्ध भाव भर दो ।।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।८।।
.....तेरी ।

तेरे चरण कमल द्वय, जिनवर! रहे हृदय मेरे ।
मेरा हृदय रहे सदा ही, चरणों में तेरे ।।
पण्डित-पण्डित मरण हो मेरा, ऐसा अवसर दो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।९।।
.....तेरी ।

दुःख नाश हों, कर्म नाश हों, बोधि-लाभ वर दो ।
जिन गुण से प्रभु आप भरे हो, वह मुझमें भर दो ।।
यही प्रार्थना, यही भावना, पूर्ण आप कर दो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।१०।।

तेरी छत्रछाया भगवन् ! मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

समाधि भक्ति

तेरी छत्रछाया भगवन्! मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।

जिनवाणी रसपान करुँ मैं, जिनवर को ध्याऊँ ।
आर्यजनों की संगति पाऊँ, व्रत-संयम चाहूँ ।।
गुणीजनों के सदगुण गाऊँ, जिनवर यह वर दो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।१।।
.....तेरी ।

परनिन्दा न मुँह से निकले, मधुर वचन बोलूँ ।
हृदय तराजू पर हितकारी, सम्भाषण तौलूँ ।।
आत्म-तत्त्व की रहे भावना, भाव विमल भर दो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।२।।
.....तेरी ।

जिन शासन में प्रीति बढ़ाऊँ, मिथ्यापथ छोड़ूँ ।
निष्कलंक चैतन्य भावना, जिनमत से जोड़ूँ ।।
जन्म-जन्म में जैन धर्म, यह मिले कृपा कर दो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।३।।
.....तेरी ।

मरण समय गुरु, पाद-मूल हो सन्त समूह रहे ।
जिनालयों में जिनवाणी की, गंगा नित्य बहे ।।
भव-भव में सन्यास मरण हो, नाथ हाथ धर दो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।४।।
.....तेरी ।

बाल्यकाल से अब तक मैंने, जो सेवा की हो ।
देना चाहो प्रभो ! आप तो, बस इतना फल दो ।।
श्वास-श्वास, अन्तिम श्वासों में, णमोकार भर दो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।५।।
.....तेरी ।

विषय कषायों को मैं त्यागूँ, तजूँ परिग्रह को ।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ता जाऊँ, नाथ अनुग्रह हो ।।
तन पिंजर से मुझे निकालो, सिद्धालय घर दो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।६।।
.....तेरी ।

भद्रबाहु सम गुरु हमारे, हमें भद्रता दो ।
रत्नत्रय संयम की शुचिता, हृदय सरलता दो ।।
चन्द्रगुप्त सी गुरु सेवा का, पाठ हृदय भर दो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।७।।
.....तेरी ।

अशुभ न सोचूँ, अशुभ न चाहूँ, अशुभ नहीं देखूँ ।
अशुभ सुनू ना, अशुभ कहूँ ना, अशुभ नहीं लेखूँ ।।
शुभ चर्या हो, शुभ क्रिया हो, शुद्ध भाव भर दो ।।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।८।।
.....तेरी ।

तेरे चरण कमल द्वय, जिनवर! रहे हृदय मेरे ।
मेरा हृदय रहे सदा ही, चरणों में तेरे ।।
पण्डित-पण्डित मरण हो मेरा, ऐसा अवसर दो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।९।।
.....तेरी ।

दुःख नाश हों, कर्म नाश हों, बोधि-लाभ वर दो ।
जिन गुण से प्रभु आप भरे हो, वह मुझमें भर दो ।।
यही प्रार्थना, यही भावना, पूर्ण आप कर दो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।।१०।।

तेरी छत्रछाया भगवन् ! मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ।